दक्षिण पश्चिम रेलवे
हुब्बल्लि मंडल

प्रतिबिंब

अंक : 32 (त्रैमासिक गृह पत्रिका) जुलाई–सितंबर–2019

हिंदी दिवस की शुभकामनाएं

संरक्षक की कलम से.....

यह अति प्रसन्नता की बात है कि मंडल की गृह पत्रिका प्रतिबिंब के 32वें अंक का विमोचन हिंदी पखवाडे के पावन अवसर पर हो रहा है। हिंदी भाषा की विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में समुचित प्रावधान किया गए। अतः सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करना हम सब रेलकर्मियों का संवैधानिक दायित्व है।

आइए, इस पावन अवसर पर राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता का निर्वहन करने हेतु हम संकल्प करें कि सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढावा देने के लिए हम अधिकतम प्रयास करेंगे तथा राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति की पूरी कोशिश करेंगे और संघ की राजभाषा नीति के अनुसार रेल कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग, सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से करेंगे। इस प्रकार के हमारे सामूहिक प्रयासों से ही राजभाषा हिंदी मंडल मंच पर प्रतिष्ठित एवं सुशोभित हो सकती है और व्यावहारिक रूप में भी राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर सकती है।

संविधान की भावनाओं के अनुरूप हम सबकी यह सामूहिक जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने दैनंदिन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और इसे अपनी कार्यप्रणाली में पूर्णतः अपनाएं और जन कल्याण से संबंधित योजनाओं में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें ताकि आम जनता की भागीदारी इसमें बढ सकें।

पत्रिका के प्रकाशन के जरिए हमारा लक्ष्य रेल कर्मियों में छिपे हिंदी लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें राजभाषा हिंदी से जोडना भी है, जिससे कि रेल अधिकारी और कर्मचारी अपने कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में कर सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मंडल की राजभाषा शाखा सतत् प्रयासरत है। वह न केवल मंडल कार्यालय में बल्कि मंडल के बडे-बडे रेल स्टेशनों पर समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं तथा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं और हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकारों की जयंतियों का आयोजन कर रही है। इन गतिविधियों की कुछ झलकियां इस अंक में दी गई हैं।

सदैव की भांति पत्रिका पर आपके सुविचार सादर आमंत्रित हैं।

जय हिंद, जय हिंदी!

(राजेश मोहन)
मंडल रेल प्रबंधक, हुब्बल्लि

माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश अंगड़ि द्वारा हुब्बल्लि मंडल में किए गए लोकार्पण / उद्घाटन

हुब्बल्लि - चेन्नै गाड़ी का उद्घाटन

वास्को - बेलगावि गाड़ी का शुभारंभ

बेलगावि - बेंगलूरु गाड़ी का शुभारंभ

हुलकोटि-अण्णिगेरि के बीच ट्रैक दोहरीकरण का लोकार्पण

ಶಾಲೆಗಾಗಿ ನಾವು-ನೀವು

ಶಾಲೆಗಾಗಿ ನಾವು-ನೀವು
ಗಲ್ಲಿ ಗಲ್ಲಿ ತಿರುಗುವಾ..
ಕೊಡುವ ಕೈ ಕರೆದು ತಂದು
ಶಾಲೆ ಮುಂದೆ ಇರಿಸುವಾ

ಪುರದ ಪುಣ್ಯ ದ್ವಿಗುಣ ಮಾಡಲು
ಅಕ್ಷರ ಮಂತ್ರ ಕಲಿಸುವಾ
ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳಾಗಿ,
ಪ್ರೀತಿ ಹಂಚಿ ನಲಿಯುವಾ

ಅವನು ಇವನು ಬೇಡ ಭೇದ
ಅರಾಜಕತೆಯ ,ರಾಜಕೀಯ
ಬಹು ದೂರ ತಳ್ಳುವಾ
ಒಲವ ಬೆರಳು ಹಿಡಿದು ನಾವು
ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವಾ

ಶಾಲೆ ಸುತ್ತ ಸಸಿಯ ನೆಟ್ಟು
ಖುಷಿಯ ಹಂಚುವಾ
ಋಷಿಯಂತೆ,ಧ್ಯಾನಸ್ಥ ಸ್ಥಿತಿಯಲಿ
ಓದು ಬರಹವ ಕಲಿಯುವಾ..

ಬೈದರೇ ಬೈಯಲಿ,ಕೈಲಾಗದವರು!
ಕಾಲೆಳೆಯುವುದೊಂದು ಬಿಟ್ಟು
ಬೇರೆನೂ ಗೊತ್ತಿಲ್ಲದವರು..
ಕಿವಿ,ಬಾಯಿ,ಕಣ್ಣು,ಇಲ್ಲದಂತಿರೋಣ

ಬೆಳೆದು, ಬೆಳಗಲಿ ಬಾಳು
ಅವರು ನಮ್ಮೂರ ಮಕ್ಕಳು
ನಕ್ಕಬಿಡಲಿ ಬಿಡಿ, ಮೊಗ ತುಂಬ
ಹೆತ್ತ ಹೊಕ್ಕುಳ!

ಮಕ್ಕಳೆಂದರೇ, ಅವು
ಭೂಮಿಯೊಡಲೊಳಗೆ ಬಿತ್ತಿದಾ ಕಾಳು
ತೇವ,ತಾಗಿದರೇ ತಾನಾಗಿ ಬೆಳೆವವು
ಇಂದಲ್ಲ ನಾಳೆ,
ಹೆಮ್ಮರವಾಗಿ ನೆರಳಾಗುವವು!

ವಚನ ನೀಡಿರೆ ನೀವು
ರುಸ್ತುಂಪುರದ,ಬಾಲ-ಬಾಲೆಯರು
ಸರಸರನೆ,ಸರಸತಿಯ ಕರೆದು
ಪೂಜೆಗೈಯೋಣ,

ಗಟ್ಟಿ ಕಾಳನು ಹೆಕ್ಕಿ
ಇಳೆಯೊಳಗೆ ಬಿತ್ತೊನ...
ಬರಡಾದ ಭುವಿಯೊಳಗೆ
ಬಂಗಾರದ ಫಸಲು ಬೆಳೆಯೋಣ
ಬನ್ನಿರೆಲ್ಲರು ಮುಂದೆ,
ಕೈ ಜೋಡಿಸಿರಿ ಇಂದೇ

चन्नबसप्पा चौगले,
सहायक तकनीशियन,
वास्को-द-गामा

ಪರಿಸರ ಮಾಲಿನ್ಯ

ಪ್ರತಿ ವರ್ಷ ಜೂನ್ -5 ನೇ ದಿನವನ್ನು ವಿಶ್ವ ಪರಿಸರ ದಿನ ಎಂದು ಆಚರಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಇತ್ತೀಚಿನ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಪರಿಸರವು ತುಂಬಾ ಮಲಿನವಾಗಿದ್ದು ಅದಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ನಮ್ಮ ಆಧುನಿಕತೆಯ ಜೀವನವೇ ಆಗಿದೆ. ಅದರಲ್ಲಿ ಪ್ರಮುಖ ಕಾರಣ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಬಳಕೆಯದ್ದಾಗಿದೆ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ಇಲವೇ ಪರೋಕ್ಷವಾಗಿ ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಬಳಸುತ್ತಿದ್ದು ಪರಿಸರ ಮಾಲಿನ್ಯಕ್ಕೆ ನಾವು ಕಾರಣರಾಗುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಭೀಕರತೆ ಅರಿತು ವಿಶ್ವಸಂಸ್ಥೆ ಈ ವರ್ಷದ ಪರಿಸರ ದಿನವನ್ನು ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಮಾಲಿನ್ಯ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ ಮೀಸಲಾಗಿದೆ. Beat Plastic Pollution ಎಂಬ ಥೀಮ್ ನೊಂದಿಗೆ ಪರಿಸರ ದಿನವನ್ನು ಆಚರಿಸಲಾಗುತ್ತಿದ್ದು ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಸೃಷ್ಟಿಸಿರುವ ಅಪಾಯವನ್ನು ಜಗತ್ತಿಗೆ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತಿದೆ. ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಬಳಕೆ ನೆಲ, ಜಲ, ಗಾಳಿ, ಅಂತರ್ಜಾಲದಿಂದ ಹಿಡಿದು ಸಮುದ್ರದ ನೀರನ್ನು ಮಾಲಿನ್ಯ ಮಾಡಿದ ನಾವು ತಿನ್ನುವ ಆಹಾರದಲ್ಲೂ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ನಮಗೆ ಅರಿವೇ ಇಲ್ಲದಂತೆ ಸೇರಿಕೊಂಡಿದೆ. ನಾವು ಬಳಸುವ ನೀರಿನ ಬಾಟಲ್ ಗಳು, ಆಹಾರದ ಪೊಟ್ಟಣಗಳು, ಬಳಸುವ ಕೆಲವು ಆಧುನಿಕ ವಸ್ತುಗಳು ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ನಿಂದಲೇ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ನಾವು ಮಾಡಿರುವ ಪ್ರಮಾದವೇ ನಮ್ಮನ್ನು ವಿನಾಶಕ್ಕೆ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವಂತಾಗಿದೆ. ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಒಗ್ಗೂಡಿ ಪರಿಹಾರ ಕಂಡುಕೊಳ್ಳಲೇಬೇಕು. ಇಲ್ಲವರಾದರೆ ಮುಂದೊಂದು ದಿನ ಇಡೀ ಪರಿಸರ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಮಯವಾಗಿ ಉಸಿರಾಡಲು ಗಾಳಿ, ಕುಡಿಯಲು ನೀರು, ತಿನ್ನಲು ಆಹಾರ ಎಲ್ಲವನ್ನು ವಿಷಮಯವಾಗಿಸುತ್ತದೆ.

ಅತಿಯಾದ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಬಳಕೆ, ಎಲ್ಲೆಂದರಲ್ಲಿ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಎಸೆಯುವುದು, ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ವಿಲೇವಾರಿ ಮತ್ತು ತ್ಯಾಜ್ಯ ನಿರ್ವಹಣೆ ಬಹು ಕಠಿಣವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇವೆಲ್ಲ ವಿಷಕಾರಿ ವಸ್ತುಗಳು ನಮ್ಮ ಜಲ, ವಾಯು ಹಾಗು ಭೂ ಮಾಲಿನ್ಯಕ್ಕೆ ಪ್ರಮುಖ ಕಾರಣವಾಗಿದೆ. ಅಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ಆಹಾರ ಸರಪಳಿಯ ಮೇಲೂ ದುಷ್ಪರಿಣಾಮ ಉಂಟಾಗುತ್ತದೆ.

ಪರಿಹಾರ ಹೇಗೆ?

ವೈಯಕ್ತಿಕವಾಗಿ ಹಾಗು ಸಾಮುದಾಯಿಕವಾಗಿ ಕೆಳಗಿನ ಕೆಲವೊಂದು ಕ್ರಮಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸಿ ಪರಿಸರ ಮಾಲಿನ್ಯವನ್ನು ತಡೆಯುವಲ್ಲಿ ನಾವು ಕೈಜೋಡಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ.

* ನಿಸರ್ಗಸ್ನೇಹಿ ಶಾಪಿಂಗ್
* ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಬಾಟಲ್ ಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟುಬಿಡಿ
* ಪ್ಯಾಕೇಜಿಂಗ್ ನಲ್ಲಿ ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ನಿಷೇಧ
* ಕಾನೂನಿನ ಮೂಲಕ ನೀತಿ ರೂಪಣೆ
* ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಮರುಬಳಕೆ

ಪರಿಸರ ಸಂರಕ್ಷಣಾ ಕಾಯ್ದೆ 1986ರ ಸೆಕ್ಷನ್ ಪ್ರಕಾರ ಪರಮಾಧಿಕಾರ ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಕ್ಯಾರಿಬ್ಯಾಗ್, ಭಿತ್ತಿಪತ್ರ ತೋರಣ, ಫ್ಲೆಕ್ಸ್, ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ತಟ್ಟೆ, ಪ್ಲಾಸ್ಟಿಕ್ ಲೋಟಗಳು ಬಳಕೆಯನ್ನು ನಿಷೇಧಿಸಲು ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಅದರ ಪಾಲನೆಯನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಕೈಜೋಡಿಸಿ ಪಾಲಿಸುವುದಾದರೆ ಪರಿಸರ ದಿನವನ್ನು ಆಚರಿಸಿದ್ದಕ್ಕೂ ಸಾರ್ಥಕವಾದಂತೆ.

दीपा,
प्वाइंट्समेन, हुब्बल्लि

कलम के धनी हुब्बल्लि मंडल के रेल कर्मियों उनके परिवारजनों एवं लेखकों से निवेदन

1. आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का 'प्रतिबिंब' में स्वागत है।
2. कृपया अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजे लेख कविता आदि के साथ एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि मेरी यह रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है तथा इसमें दी गई सामग्री की जिम्मेदारी लेखक की है।
3. पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए लेखकों और पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है।
4. रचनाएं तथा फोटो rbadiv.swr.ubl@gmail.com पर ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए राजभाषा शाखा, मंडल कार्यालय,हुब्बल्लिमें संपर्क करें। (रेलवे फोन-45018 या 0836-2345018)

स्वच्छता ही सेवा

स्वच्छता ही सेवा के अंतर्गत मंडल कार्यालय से हुब्बल्लि रेलवे स्टेशन तक वॉकेथॉन आयोजित किया गया । स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए छात्रों और भारत स्काउट्स एंड गाइड्स द्वारा लघु नाटक प्रस्तुत किया गया। मंडल रेल प्रबंधक ने हुब्बल्लि रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के साथ बातचीत की और एकल-उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं का उपयोग न करने की सलाह दी। पुनः प्रयोज्य बैग, खाद्य कंटेनर आदि ले जाने की सलाह दी गई। यात्रियों के एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के थैलों को कपड़े के थैलों से बदल दिया गया।

स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करने और एकल-उपयोग प्लास्टिक वस्तुओं को उपयोग न करने के लिए हुब्बल्लि मंडल के विभिन्न प्रमुख स्टेशनों पर स्वच्छता ही सेवा का आयोजन किया गया। इस दौरान श्रमदान भी किया गया।

स्वच्छता पखवाड़ा

दिनांक 16-09-2019 को स्वच्छ पखवाड़ा के उद्घाटन तथा मंडल कार्यालय से हुब्बल्लि रेलवे स्टेशन तक वॉकेथॉन आयोजित किया गया। इस दौरान स्वच्छता पर शपथ दिलाई गई, नुक्कड़ नाटक, श्रमदान और वृक्षारोपण का आयोजन किया गया।

टूटते रिश्ते

अभी नींद पूरी नहीं हुई थी कि किसी ने दरवाजा खटखटाया मेरे उठने तक दरवाजा कई बार खट-खट करता रहा, मैंने कहा रुको भाई, कौन है सुबह-सुबह परेशान कर रहा है। मैंने दरवाजा खोला तो सामने बिरजू खड़ा था, अरे बिरजू तू, क्या हो गया तुझे, सुबह-सुबह क्यों परेशान कर रहा है, बता क्या चाहिए।बिरजू ने बड़े प्यार से कहा, काका मैं आपको परेशान करने या कुछ लेने नहीं बल्कि आपको कुछ दिखाने और देने आया हूं, पहले आंख बंद करो फिर मिलेगा, अरे बिरजू क्यों पहेलियां भुजा रहा है लान, क्या है, काका ये लो आपके लिए चिट्ठी आई है। चाचा ने भेजी है शहर से, अच्छा ला, अरे फोन के जमाने में चिट्ठी क्यों, अरे मैं तो भूल ही गया कि मेरे पास तो फोन ही नहीं,बिरजू मुझे चश्मा ढूंढना पड़ेगा तू ही बता क्या लिखा है। काका चाचा ने आपको शहर बुलाया है कल ही जाना है टिकटभी भेजा है अच्छा ला दो। मैं खुश हो गया विमला की तस्वीर के सामने खड़े होकर कहने लगा विमला आज तू जिंदा होती तो बहुत खुश होती। तू हमेशा कहती थी कि हमारा कोई नहीं है, देख हमारे बेटे ने मुझे शहर बुलाया है अपने पास, हां विमला चला जाऊंगा तुम्हारे जाने के बाद कितना अकेला पड़ गया था मैं, अकेले भी कोई जिंदगी है, वहां बहू बेटा और नाती है अच्छा लगेगा उनके साथ दिन अच्छे से गुजर जाएंगे। अब जिंदगी भी कितनी बची है अंत भला तो सब भला।

बिरजू ने फिर से टोका अरे काका शहर जाकर हमें भूल तो नहीं जाओगे, कैसे बातें करता है पगले, बिरजू कुछ दिन बाद तू भी शहर आ जाना, चाचा को बोलकर कहीं काम लगवा दूंगा शहर में, बहुत पहचान है उसकी बड़े लोगों में उठना बैठना है मेरे बेटे का बड़ा आदमी है मेरा बेटा तू भी दिन भर इधर से उधर घूमता रहता है काम करेगा तो चार पैसे आएंगे ठीक है ना बिरजू जरा मेरे मोती का ध्यान रखना बिरजू, और मैं गांव छोड़कर शहर चला गया। वहां बेटे का प्यार, बहू का आदर, मुन्ने का दुलार बहुत अच्छा लग रहा था, रहने के लिए अच्छा कमरा और समय से नाश्ता और खाना सुबह-सुबह टहलना और बड़े-बूढ़े से बातें करना एक सपने जैसे लगने लगा। मेरी तो दुनिया ही बदल गई मैं अपने आप को दुनिया का सबसे खुशनसीब इंसान समझने लगा। मुन्ना रात भर मेरे पास रहता है उसे कहानियां सुनाता और उसकी दादी की बातें बताता और हम दोनों खूब हंसते मैं मुन्ना को अच्छे संस्कार देने की कोशिश करता।

वक्त बड़ी तेजी से गुजर रहा था कल क्या होने वाला है मुझे कुछ मालूम ना था मैं तो अक्सर विमला की तस्वीर से बातें करता और अपने मुन्ने के प्यार में खोया रहता। धीरे-धीरे बहू और बेटे का व्यवहार बदलने लगा मैं कुछ समझ ही नही पा रहा था कि क्या हो रहा है खाने और नाश्ते के बारे में भी कोई ध्यान न देता। मुन्ना कई दिनों से मेरे पास सोने नहीं आया मैं रात भर मुन्ने के लिए तड़पता रहता, सुबह जब मुन्ने को गोद में उठाता तो बहू अपने पास खींच लेती, मुझे लगता क्या मुझसे कोई भूल हो गई पर कोई जवाब ना मिलता। बहू और बेटे का झगड़ा दिन भर दिन बढ़ने लगा। कुछ समझ नहीं पा रहा था कौन सी गलती हो गई। मैंने सुना बहु बेटे से कह रही थी मैं तुम्हारे बाप को और अधिक नहीं रख पाऊंगी और अगर आपको रखना है तो उनके लिए नौकरानी रख लो मुझसे उनकी सेवा और नहीं होगी और अगर आप मेरी बात नहीं माने तो मैं अपने मां-बाप के घर चली जाऊंगी यह सुनकर मैं सन्न रह गया क्या सोचा था क्या हो गया। अब ज्यादा कोई मुझसे बातें नहीं करता। बेटा जब खाना लेकर आता तो लगता है उसकी आंखें कुछ बोलना चाहती है पर कुछ कहन पाता अपनों से ही मुझे अजीब सा डर लगने लगा। एक दिन तो हद हो गई जब बेटे ने बहू पर हाथ उठा दिया। मैं समझ चुका था कि यहां पर और रहना ठीक नहीं भला मुझे किसी की जिंदगी में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। बेटों का मां बाप पर अधिकार है पर मां-बाप का अपने बच्चों पर नहीं। फिर से अपने घर की याद आने लगी। अपना ही घर अच्छा है अकेला ही सही पर आजाद हूं। विमला तू ठीक कहती थी कि अपना इस दुनिया में कोई नहीं भला बूढ़े मां बाप को कौन साथ में रखना चाहेगा। अच्छा हुआ जो साथ छोड़ कर चली गई आज तू जिंदा होती तो तुझे बहुत दुख होता। कई दिन इसी सोच में गुजर गए। मैं अब यहां से जाना चाहता था पर मुन्ने को छोड़कर जाने का दिल ही नहीं करता था मैं ही बहू और बेटे को और तकलीफ नहीं देना चाहता था।

सोच रहा था मैं कितना अभागा हूं जिन बच्चों को ममता की छांव में पाल पोस कर अपने बुढ़ापे के लिए बड़ा किया था आज उनकी नजरों में हम सिर्फ एक सूखे हुए वृक्ष के समान थे। मैं तंग आ गया था अपने व्यवहार से आखिर एक दिन सुबह मैंने विमला की तस्वीर ली और अपना सामान संभाला और लेकर निकल पड़ा कुछ दूर जाने के बाद मैं फिर से लौट आया मुन्ना का प्यार मुझे वापस खींच लाया सोचा मुन्ना कैसे रहेगा मेरे बिना वह मुझे पूछेगा मैंने एक नजर मुन्ना पर डाला मुन्ना गहरी नींद से सो रहा था मेरे कदम रुके पर रुकन सके और मैं रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा।

स्टेशन पहुंचा ट्रेन एकघंटे लेट थी मैंने सोचा चलो अच्छा हुआ शायद इस बीच मुझे कोई बुलाने आ जाए। सवेरा हो चुका था नीला आकाश साफ दिखाई देने लगा था, हवा में थोड़ी ठंड थी सूरज फिर से निशा केसाये को चीरकर उजाला बिखरने को बेताब था। पंछी फिर से अपना घोंसला छोड़कर पेट की तपस मिटाने अनजानी मंजिल की ओर निकल पड़े थे।

मैं अकेले स्टेशन के कोने में बैठा बेबस, लाचार, मायूस चारों तरफ देख रहा था। दुनिया की भीड़ में अपना कोई न था। कलेजे के टुकड़े ने अपने व्यवहार से कलेजे के हजारों टुकड़े कर दिए थे। सोच रहा था मुन्ना कहीं मिल जाता तो मुझे अपने कलेजे में छुपा लेता। मेरे आंसुओं की धार तेज हो रही थी, मैं विमला से कह रहा था विमला तू मुझे छोड़कर क्यों चली गई मैं नाराज हूं तुमसे मुझे मनाओगी नहीं मैंने कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया मैं भूखा हूं, विमला से मैं यह कह रहा था कि ट्रेन आ गई, मेरे कदम धीरे-धीरे ट्रेन के दरवाजों की तरफ बढ़ने लगे, मैं लोगों के धक्के खाकर भी ट्रेन के दरवाजे पर खड़ा रहा कि शायद मुझे कोई बुलाने आ जाए, मैं सोच रहा था कि अगर कोई आया तो मैं वापस चला जाऊंगा, मुन्ना मेरे बारे में पूछेगा पर कोई नहीं आया। ट्रेन ने सीटी बजाई और ट्रेन चल पड़ी, ट्रेन के चलते ही पेट में एक आग सी लगी और सीने में जोर से दर्द उठा मैं विमला की तस्वीर लेकर ट्रेन के दूसरे दरवाजे पर बैठकर जोर-जोर से रोने लगा पर ट्रेन की तेज आवाज में मेरे रोने की आवाज छुट कर कहीं रह गई

श्यामसुंदर,
मुख्य वाणिज्य लिपिक, वास्को

रेल कर्मी

लिख रहां हूं लेख मैं
एक रेल कर्मी पर
शांत, सरल, सहृदय
व्यक्ति जो रहते हैं
सदा अपनी ड्यूटी पर।।

सुबह हो या दोपहर,
शाम हो या फिर रात,
सर्दी हो या गरमी
फिर हो चाहे बरसात
साहसी-संयमी-एकाग्र,
व्यक्ति तो रहते है सदैव
यात्रियों की सेवा में तत्पर
लिख रहा हूं लेख मैं,
एक रेल कर्मी पर।।

अपनों और सपनों से दूर
सुख-सुविधाओं से मजबूर
देश के कोने-कोने में
मिलेंगे तैनात जैसे,
सैनिक रहते हैं, सरहद पर।।
लिख रहा हूं, लेख मैं
एक रेल कर्मी पर।।

मैं भी हूं, एक रेल कर्मी
परिवार हैं सारे सहकर्मी
भारत की इस जीवन-रेखा,
भारतीय रेल-परिवार से
गर्व मुझे है, जुड़ने पर।
लिख रहा हूं, लेख मैं
एक रेल कर्मी पर।।

कालीचरण कुमार
लगेज पोर्टर, गदग

हुब्बल्लि मंडल का 73वां स्वतंत्रता दिवस

हुब्बल्लि मंडल ने 73वां स्वतंत्रता दिवस देश भक्ति व बड़े उल्लास के साथ मनाया। मंडल प्रबंधक, श्री राजेश मोहन ने झंडारोहण किया एवं परेड की सलामी ली और चालू वित्त वर्ष में हुब्बल्लि मंडल द्वारा किए गए सर्वोत्तम कार्य निष्पादन पर प्रकाश डाला। आगामी समय में हुब्बल्लि मंडल को और ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए सभी रेल कर्मियों से सहयोग की अपेक्षा की। इस अवसर पर रेलवे हाई स्कूल, दपरे महिला संगठन का स्कूल और भारत स्काउट द्वारा मंचित रंगारंग कार्यक्रमों ने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। हुब्बल्लि मंडल के रेसुब कर्मियों ने मन मोहक बैंड प्रस्तुत किया।

मंडल रेल सप्ताह की झलकियां

किसान

(अन्नदाता)

अन्नदाता की खुशियों का मौसम चौमासा आया
बरखा की बूंदें देख मन का मयूर हरसाया
जगी आस फिर मन में, इस बार फसल लहलायेगी
हुई ईश्वर की कृपा तो, कर्ज से निजात मिल जाएगी
जाएंगे बच्चे स्कूल, वो ताल से ताल मिलायेंगे
हमारे अधूरे सपनों को वो सच करके दिखलायेंगे।

हे प्रकृति इस बार न करना क्रूर मजाक तुम
देना साथ हमारा मत ना देना फसल बिगाड तुम
डाल बीज तेरे आंचल में मां (धरती मां) तुझसे आस लगाई है।
तू ही है सर्वस्व हमारी, देखो बारिश आयी है।
इस बार कृपा कर देना मां, सब आस पूरी कर देना मां,
इसे अन्नदाता की झोली को धन धान्य से भर देना मां।

नहीं है अब सामर्थ्य, ले कर्ज मैं बीज खरीद पाऊं
हुई न फसल इस बार तो, मैं कब अब जी पाऊं

मां दुखःमेरा ना कोई इस जग में जान है।
कहते हैं अन्नदाता सभी, फिर भी सब बने बेगाने हैं
न मदद को कोई हमारी, आगे इस जग में आता हैं
है किसी नियति हमारी मां, हम कैसे बने अन्नदाता हैं।

कैसे? कण-कण उपजाते है, हम अपना लहू तपाते है।
सब खाते हैं मेरा दिया हुआ, मेरे बच्चे भूखे रह जाते हैं।

राधेश्याम कुम्हार
व.टिकट परीक्षक, वास्को-द-गामा

मानवता

स्वगुण-गान में मद हो
दूसरों से प्रशंसा चाहते
अपने में मन-मतंग बस
कहो क्या तुम मानव हो?

नीचे-पीछे चलते कोई भी
उन्हें सहारा की दरकार हो
उनसे नजर फेर चलने वाले
कहो क्या तुम मानव हो?

आकांक्षाओं के मद-मत हो
बालू में खूब हल चलाते हो
महत्वाकांक्षी दया हीन बन
कहो क्या तुम मानव हो?

स्व-उत्थान के आगे सब
नाते-रिश्ते दरकिनार हुए
आशा -भरोसा को तोड़के
कहो क्या तुम मानव हो?

प्रेम, सरस, सरल, समभाव
दया-कृपा के लिए पत्थर हृदय
मानवीय संवेदना छोड़ गर्व में
कहो क्या तुम मानव हो?

निरंजन कुमार
वरिष्ठ माल गार्ड
कैसलरॉक, हुब्बल्लि।

और वो चली गई।

आयी थी वो हाथों में लेकर गुलाब,
चेहरे पर डाले हया का नकाब,
उठ के उमंगों का दिल में सैलाब,
जगा के धड़कनों में अनकही प्यास...
... और वो चली गई।

जब तन्हाइयां बन गई थी जिंदगी,
दिल में न जाने कैसी थी बेबसी,
वो सांसों में चुपके से आ बसी,
बनकर मेरे ख्वाबों की हमनशीं...
... और वो चली गई।

जब जुबां में बंद थे मेरे अल्फाज,
बनी वो मेरे दिल की आवाज,
सिखाया उसने जीवन का अंदाज,
बजा के मन में सुरों का साज...
... और वो चली गई।

बनाया इस दिल को उसने आशियाना,
फिर हुआ मैं कैसे अनजाना,
मेरी सदाओं का था जो अफसाना,
अभी गा ही रहा था मेरे संग जमाना...
... और वो चली गई।

डूब जाता है अगर वो न बनती साहिल,
ला दी करीब उसने दूर होती मंजिल,
पर न जाने ऐसी भी क्या हुई मुश्किल,
कि पुकारता रहा उसे ये दिल...
... और वो चली गई।

उसकी बेरुखी को कहूं कैसे बेवफाई,
इस जमाने जैसी वो न थी हरजाई,
पर वक्त ने न जाने क्या दिया सुझाई,
कि एक तरफ गूंज रही थी शहनाई...
... और वो चली गई।

बिखर गया जज्बात के संग स्वाभिमान,
मायूस चेहरा ही बन गई मेरी पहचान,
जब भी सुनाता हूं, जमाने को ये दास्तान,
पूछता है जमाना चेहरे पर लिए मुस्कान...
... और वो चली गई।

अंदाजा न था हमें इस कदर भी जिंदगी होगी,
ये एहसास ही मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी होगी,
दर्द-ए-जख्म रुक जाते हैं आकर लब तक,
तू ही बता ऐ खुदा, करूं ये इंतजार कब तक?

नीतीश कुमार रंजन
उप मुख्य सतर्कता अधिकारी
दपरे, हुब्बल्लि.

हुब्बल्लि मंडल की गतिविधियां

दूध सागर फाल्स स्टेशन का उद्घाटन

बाढ़ राहत कार्य में मदद

हुब्बल्लि स्टेशन को सर्वोत्तम रखरखाव स्टेशन शील्ड

पेंशन अदालत

पब्लिक स्टोर का उद्घाटन

जनता फ्रिज का उद्घाटन

हिंदी स्मरण प्रतियोगिता-वास्को स्टेशन

हिंदी स्मरण प्रतियोगिता - कैसलरॉक स्टेशन

राजभाषा की गतिविधियां

हिंदी कार्यशाला-विजयपुर स्टेशन

मैथिलीशरण गुप्त जयंती-हुब्बल्लि स्टेशन

प्रेमचंद जयंती - गदग स्टेशन

हिंदी क्विज - होसपेटे स्टेशन

संपादक मंडल

संरक्षक
श्री राजेश मोहन
मंडल रेल प्रबंधक, हुब्बल्लि

मुख्य संपादक
श्री मुरली कृष्णा
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा)

संपादक
श्री सचिन रा. जैन
राजभाषा अधिकारी

सह संपादक
श्री एम. सावंतनवर
वरिष्ठ अनुवादक

राजभाषा शाखा, रेलवे फोन - 45018 या 0836-2345018, ईमेल पता : rbadiv.swr.ubl@gmail.com